© 2017 IJSRST | Volume 3 | Issue 8 | Print ISSN : 2395-6011 | Online ISSN : 2395-602X

पाणिनि की अष्टाध्यायी का संस्कृत में योगदान

नेम चन्द्र
शोधच्छात्र,
संस्कृत तथा प्राकृत भाषा विभाग,
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।

इस क्षणभंगुर विश्व में कुछ कृतविद्य महान् लेखकों अथवा आचार्यों का ग्रन्थ या तो काल कवलित होकर मनुष्यों के मतिष्क में क्षीण स्मृति की रेखा बनकर रह जाता है, अथवा इतना जनप्रिय बन जाता है कि काल भयंकर प्रहार भी उस पर सदा असफल होते रहते हैं। भारतीय आचार्यों की अगली पंक्ति में विराजमान महर्षि पाणिनि की अष्टाध्यायी–इसी प्रकार का ग्रन्थ है, जिसे काल नष्ट नहीं कर पाया, वह आज भी उसी रूप में वर्तमान है। जैसा कि ढाई हजार वर्ष पहले था। पाणिनि की अष्टाध्यायी का अस्तित्त्व तब तक रहेगा जब तक विश्व में संस्कृत का अध्ययन–अध्यापन जारी रहेगा।

पाणिनि ही सबसे पहले व्यक्ति हैं जिन्होंने भाषा का विश्लेषण किया। पाणिनि की महान् उपलब्धियों में सूत्रों का लघुकरण माना जा सकता है। इन्होंने पहले की अपेक्षा शुद्ध और प्रांजल सूत्रों की उद्भावना की, सूत्रों को उलझा हुआ नहीं रखा तथा विद्यार्थियों की शीघ्र स्मृति में आनेवाला तरीका अपनाया। सूत्रों के लघुकरण में पाणिनि को प्रत्याहार सूत्रों से बहुत सहायता प्राप्त हुई थी जैसे अच् कहकर पाणिनि आगे बढ़े। आप उसका अर्थ समझते रहें। अनुबन्धों की कृपा से भी इसमें सहायता मिली है। गणों की सहायता से भी पाणिनि को व्याकरण के संक्षेपीकरण में सहायता मिली। अपने सूत्रों में पाणिनि गण के प्रथम शब्द देते हैं शेष गणपाठ की सहायता से समझना पड़ता है पारिभाषिक शब्दावली से भी पाणिनि को बहुत सहायता मिली। जैसे टि,घु,भ,धि,षष्,लुक, आदि। पारिभाषिक शब्दों में कुछ तो इनके पूर्ववर्तियों को भी ज्ञात थे, कुछ पाणिनि स्वयं बनाये हैं। पाणिनि से सूत्रों के आगे की ओर अनुवृत्ति का भी नियम है। अपने से पहले होने वाले सूत्रों का कुछ भाव अथवा रूप आगे सूत्रों में आता है इसे ही अनुवृत्ति कहते हैं। इसी कारण पाणिनि ने कुछ सूत्रों में कुछ सूत्रों को अधिकार सूत्र बनाया जिसका मतलब हुआ कि सूत्र चाहे तो सम्पूर्ण रूप से अथवा उसका एक भाग मात्र आगे के सूत्रों में आयेगा, उसकी अनुवृत्ति होगी, यदि एक ही जगह पर दो सूत्र समान रूप से आवृत्त होने योग्य रहे तो आवृत्ति किसकी होगी? इसका उत्तर यह है कि अष्टाध्यायी के क्रम में जो सूत्र पहला हो वही आवृत्त होगा। परिभाषा सूत्रों के निर्माण के कारण भी पाणिनि को व्याकरण के संक्षेपीकरण में सहायता मिली।

अपनी अष्टाध्यायी को अधिक उपयोगी बनाने के लिए पाणिनि ने उसमें धातुपाठ, गणपाठ, उणादि–सूत्रों की रचना कर मिलाया। धातुपाठ के अनुबन्ध उसी प्रकार उपयोगी है जैसे अष्टाध्यायी के।

अष्टाध्यायी का अध्ययन करने से हमें तात्कालिक भारतीय समाज, सभ्यता, संस्कृति आदि का स्पष्ट पता चलता है। पणिनि ने जिस सूत्रों का निर्माण किया वे आज तक मान्य हैं। आज भी जबकि संस्कृत की कोई दुर्दशा बाकी नहीं रही है, सारा विश्व पाणिनि की प्रतिभा से चकित है, भारतीय मनीषियों ने कभी पाणिनि को आचार्य, कभी वेदपुरूष कभी भूतभावना भवानीपति का अवतार कहा है तथा उनके सामने श्रद्धा से नत हुए हैं–

''पश्यति त्वाचार्यो नाकारस्य लोपो भवतीति।
पश्यति त्वाचार्यो न व्यंजनस्य गुणो भवतीति।।
पश्यति त्वाचार्यः स्थानिवदा देशो भवतीति।
सूत्रकारों महेश्वरः वेदपुरूषो वा। शिववेद पुरूषों वात्राचार्य''।। (नागेशभट्ट)

पाणिनि की अष्टाध्यायी में केवल व्याकरण के ही सूत्र नहीं, प्रत्युत सूत्रों में गुँथे हुए–तात्कालिक भारत की सभ्यता, संस्कृति भी है।

भारत में व्याकरण का अध्ययन ब्राह्मण युग में ही प्रारम्भ हो चुका था। इस विषय पर लिखा गया प्राचीनतम ग्रन्थ यास्क का 'निरूक्त' है। लेकिन इसमें केवल वैदिक साहित्य में प्रयुक्त शब्दों की व्युत्पत्ति का ही विवेचन है। सबसे पहला ग्रन्थ जिसमें लेखक द्वारा अपने समय में बोली जाने वाली संस्कृत भाषा के व्याकरण का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है, पाणिनि कृत 'अष्टाध्यायी' है। यह ग्रन्थ संसार के व्याकरण ग्रन्थों में मूर्धन्य स्थान रखता है। शायद विश्व में किसी देश के भाषा के विकास पर किसी एक ग्रन्थ का उतना प्रभाव नहीं पड़ा, जितना पाणिनि की अष्टाध्यायी का संस्कृत भाषा पर।

पाणिनि की अष्टाध्यायी संस्कृत भाषा का अध्ययन करने वालों के लिए ही नहीं, अपितु तत्कालीन युग की सांस्कृतिक अवस्था का अध्ययन करने वालों के लिए भी विशेष महत्त्वपूर्ण है उदाहरण के लिए इसके गणपाठों में नगरों, ग्रामों और जनपदों एवं वैदिक शाखाओं, चरणों तथा गोत्रों की सूचियाँ मिलती हैं, जिनसे इतिहासकारों के लिए यह ग्रन्थ अभिलेखों के समान महत्त्वपूर्ण हो गया है। इसी प्रकार इसकी सहायता से तत्कालीन युग में भारतीयों के खान–पान, वेश–भूषा, मनोरंजन के साधन, संगीत आदि कलाओं, सिक्कों, उद्योग–धन्धों, व्यापार विधियों तथा शिक्षा प्रणालियों का ज्ञान उपलब्ध होता है। धर्म–दर्शन, राजनीतिशास्त्र और राजनीतिक संस्थाओं

के ऐतिहासिक विकास के अध्ययन में भी इस ग्रन्थ से सहायता मिलती है। उदाहरणार्थ पाणिनि ने अपने समय के विविध सम्प्रदायों और धार्मिक विश्वासों का उल्लेख किया है। उनके द्वारा वासुदेव सम्प्रदाय और मस्करी परिब्राजक एवं विविध गणतन्त्रात्मक जातियों और आयुधजीवी संघों का उल्लेख ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यन्त रोचक है।

पाणिनि की अष्टाध्यायी अपने ढंग का अनूठा ग्रन्थ है। इसमें उन्होंने संस्कृत भाषा और उसके शब्दों की व्युत्पत्ति का अति संक्षेप–सूत्रशैली में विवेचन किया है। संस्कृत भाषा विषयक समस्त सामग्री का इतना संक्षेप में अध्ययन उसके पूर्व अथवा बाद में कोई नहीं कर पाया।

सन्दर्भ :–

1. पाणिनि की अष्टाध्यायी की भूमिका
2. संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका – डॉ0 बाबूराम सक्सेना
3. वैदिक साहित्य का इतिहास – डॉ0 सुरेन्द्र देव शास्त्री
4. वैयाकरण – सिद्धान्त मजूषा – नागेशभट्ट